Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीति चिन्तन का प्रभाव

डॉ. कल्याण सिंह मीना
लेवल – 2 अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय महाराजपुरा,
तहसील – बस्सी, जिला – जयपुर , राजस्थान

Article Info
Volume 3, Issue 6
Page Number : 119-125

Publication Issue :
November-December-2020

Article History
Accepted : 10 Nov 2020
Published : 24 Nov 2020

सारांश- पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक भारतीय विचारक समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, पत्रकार और इतिहासकार थे। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माण में सहायक थे और भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष बने। दीनदयाल द्वारा स्थापित एकात्म मानव दर्शन की अवधारणा पर आधारित एक राजनीति जीवन भारतीय जनसंघ का एक उत्पाद है। उनके अनुसार एकात्म मानव दर्शन प्रत्येक मानव शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का एक एकीकृत कार्य है। उन्होंने कहा कि एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत व्यक्तिवाद, लोकतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद और पूंजीवाद जैसी पश्चिमी अवधारणाओं पर निर्भर नहीं हो सकता है। उन्होंने सोचा कि भारतीय प्रतिभा पश्चिमी सिद्धांतों और विचारधाराओं से घुटन महसस करती है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप से एक सर्वकालिक और सार्वभौमिक जीवन दर्शन है। दर्शन के अनुसार, मानव पूरे ब्रह्मांड के केंद्र में है, प्रकृति के साथ एकीकरण करता है, परिवार, समुदाय, समाज, राष्ट्र और दुनिया के प्रति अपनी बहुपक्षीय जिम्मेदारियों का निर्वहन करते है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक जीवन त्याग, गौरव, प्रसिद्धि और सम्मान का जीवन रहा है, जिसमें महत्वपूर्ण लेशमात्र भी नहीं है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय को पद पाने की कोई इच्छा नहीं थी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने देश की आवश्यकताओं के कारण राजनीति को अपनाया था और उनक जीवन भर संघ के मूल्य सही रहे। उनके सामने कोई चुनाव नहीं था, बल्कि पूरे देश के ढांचे का काम था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने विघटित भारतीय समाज को एक साथ लाने का जिम्मा उठाया था जो लगभग एक हजार वर्षों तक मुस्लिम आक्रमण और देश के शासन और अंग्रेजी आक्रमण के कारण और दो सौ से अधिक वर्षों तक शासन करने के कारण बिखर गया था। राजनीति इसका एक हिस्सा मात्र था। उनकी राजनीति की समीक्षा और विश्लेषण करने और उद्देश्य की खोज करने के लिए उनके काम को सोचना और विश्लेषण करना अपरिहार्य है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने जीवन में बहुत ही कम समय में देश की राजनीति में नए विचारों को पेश किया था और लोकतांत्रिक व्यवस्था को सीज किया। जब पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय राजनीति में प्रवेश किया, उस समय देश में कई परिस्थितियाँ व्याप्त थीं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय चाहते थे कि ऐसा कोई व्यक्ति हो जो धर्म का पालन करे और वे व्यवस्था के नाम पर राज्यवाद के पोषण के विरोधी थे, लेकिन राज्य की व्यावहारिक आवश्यकताओं को व्यक्ति और समाज के लिए एक

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सहायता के रूप में मानते थे, इसलिए वे एक कम शासित राज्य प्रणाली के पक्ष में थे, और शासन के बजाय आत्म नियंत्रण और स्व-शासन द्वारा एक ही व्यावहारिक कार्य किया। उन्होंने इसे पूरा करने के लिए राजनीति में प्रवेश किया।

राजनीतिक जीवन में प्रवेश

जैसे लोकमान्य तिलक मूल रूप से राजनीतिज्ञ या राजनीतिज्ञ नहीं थे, लेकिन उन्होंने देश की आवश्यकता के कारण राजनीति को अपनाया और उसी तरह से पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राजनीति को जरूरतों के कारणों को भी अपनाया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारत का गौरव थे। उन्होंने भारतीयों के भ्रमित जीवन में जीवन का संचार किया है। जिससे लोग साम्यवाद, समाजवाद, पूंजीवाद से अलग हो गए और राष्ट्रवाद की ओर चल दिये थे। हर किसी के दिल में एक समद्ध भारत के सपने थे और कुछ करने का इच्छा थी। जिसके लिए संघर्ष द्वारा नहीं बल्कि सदभाव से दुश्मनी जीतकर विकसित किए गए थे आदर्श मानवीय मूल्यों की स्थापना की भावना से इसका श्रेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय को दिया है। श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 21 अक्टूबर 1951 को दिल्ली में भारतीय जनसंघ की स्थापना की और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का समर्थन भी इनकी पार्टी को मिला। 1951 में पंडित दीनदयाल उपाध्याय को राजनीति में लाने का श्रेय तत्कालीन सरसंघ चालक श्री पंडित पूज्य माधवराव , सदाशिवराव गोलवलकर गुरुजी दिया गया। गुरुजी की प्रेरणा से पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का काम छोड़ कर जनसंघ के सदस्य बन गए और सक्रिय राजनीति में आ गए। डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे देशभक्त नेता अपने विचारों और कार्यों के प्रति ईमानदार रहे है। डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 21 सितंबर 1951 को लखनऊ में क्षेत्रीय सम्मेलन बुलाकर क्षेत्रीय जनसंघ की स्थापना की थी। डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी पूरे कश्मीर को भारत में मिलाना चाहते थे। उन्होंने जनसंघ नामक एक राजनीतिक पार्टी की स्थापना की और मुखर्जी हिंदू शरणार्थियों की उचित प्रणाली के लिए भी उत्सुक थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय पूरी जिंदगी मेकिंग और ईफ में लगे हुए थे। जनसंघ 'के समर्थक उनकी दृढ़ता, निष्ठा और कड़ी मेहनत ने 1952 में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी से प्रभावित होकर उन्हें अखिल भारतीय जनसंघ का मंत्री नियुक्त किया। डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था- अगर मुझे दो दीनदयाल मिल जाते, तो मैं पूरे भारत का नक्शा बदल देता। 1940 में पंडित दीनदयाल उपाध्याय को सरकारी प्रशासनिक सेवा में पहले स्थान के लिए नामांकित किया गया था और उनके इस्तीफे के कारण नौकरी के वजीफे को स्वीकार नहीं कर पाए। उन्होंने खुद को चरणों में अर्पित कर दिया था और लखीमपुर जिले में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में काम करने लगे थे। उनके समर्पण और दृढ़ता के कारण उन्हें 1945 में उत्तर प्रदेश के सह प्रचारक का काम दिया गया और 1951 तक उन्होंने तत्कालीन यूपी प्रचारकों के काम को सफलतापूर्वक पूरा किया जो भाऊराव देवरस से प्रेरित भी थे। अपने आदर्शों को साकार करने के उद्देश्य से उन्होंने लखनऊ में राष्ट्रधर्म प्रकाशन नामक एक संस्था की स्थापना की और अपने विचारों को प्रचारित करने के लिए राष्ट्रधर्म मासिक पांचजन्य साप्ताहिक और बाद में स्वदेश प्रतिदिन लॉन्च किया। स्वदेश की पत्रिका अभी भी लखनऊ में तरुण भारत के रूप में प्रकाशित हो रही है। उनके विचार मेहनती हैं। उन्हें शुरू करने के लिए उन्होंने सभी स्तरों पर काम किया है। उन्होंने एडिटर, कम्पोजिटर, कैरियर ले जाने वाली पत्रिकाओं और ऑफिस के चपरासी के रूप में भी काम किया है। उन्होंने अपने आचरण से इसका निर्माण किया। उनके काम करने के तरीके को देखकर सभी लोग चकित थे। उनकी भक्ति लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत थी। आज भी उनके द्वारा चलाए जा रहे प्रकाशन सुचारू रूप से चल रहे हैं। महात्मा गांधी की हत्या के बाद ही संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उस हत्या से कोई संबंध नहीं था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई और पांडे ने सत्याग्रह आंदोलन का सफल संचालन किया। अपने अधिकार के माध्यम से जनता सही जगह का पता लगा सकती है। सरकार ने उनके प्रकाशन पर रोक लगा दी जब उनकी आवाज समाज में एक नए प्रकाशन शंखनाद राष्ट्रभक्त के माध्यम से गूंजती रही और पंडित दीनदयाल उपाध्याय का व्यक्तित्व पूर्णता की ओर बढ़ता रहा है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का पत्रकारिता में प्रवेश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने कई भूमिकाएँ एक साथ निभाई हैं। उनका लेखन अद्वितीय था और लेखन मूल था। राष्ट्रधर्म की मासिक पत्रिका के माध्यम से 1947 में पत्रकारिता में प्रवेश किया। पत्रकारिता के माध्यम से आपकी बात आसानी से जन-

जन तक फैलाई जा सकती है। यही कारण है कि पांडे ने राष्ट्र की सेवा के लिए पत्रकारिता को अपनाया और लेखों के माध्यम से जनता में जागरूकता पैदा करने का काम किया। उन्होंने पत्र जोड़कर लेखन के माध्यम से दिल के भावों को व्यक्त किया। उनका लेखन तथ्यात्मक था। जो देश की परिस्थितियों के अनुसार सही था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रकाशित राष्ट्रधर्म पत्रिका भारत सहित दुनिया के कई देशों में पढ़ी जाने वाली एक सांस्कृतिक पत्रिका है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यों को समान महत्व देते हए और पत्रिकाओं के प्रकाशन, पंडित दीनदयाल उपाध्याय के पत्रकारिता के प्रति प्रेम को बताते हुए उनके सहयोगी वचनेश त्रिपाठी जी कहते हैं, ठंडी रात होने के कारण, रात्रि पहर की रचनाएँ कम थीं। दैनिक स्वदेश ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के मार्गदर्शन में जारी किया गया था। जो उसे सुबह छोड़ना पड़ा सुबह के लिए अखबार ठीक करने के लिए इसके लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वयं ने पूरी रात की रचना की और एक-एक करके अक्षर जोड़ते रहे। अक्ष वह जिसका अर्थ कभी नाश नहीं होता है। शब्द अक्षरों और अक्षरों को जोड़कर बनाया गया है और . शब्द ब्रह्म है। भारतीय इतिहास के कर्मयोगी पूरी रात पत्र जोड़ते रहे। आज की भारत की पीढ़ी सौभाग्यशाली है कि उसे एक महान व्यक्ति का जीवन मिला है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय कर्मकांड देने के लिए ऋषियों का जीवन कथन, और कर्म प्राप्त हुआ है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सरसंघचालक किया उनके पास पुस्तक का हिंदी अनुवाद भी था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय में अद्भुत लेखन क्षमता थी, जिस क्षेत्र में उनकी रचनाएँ उठती थीं, वही पंडित दीनदयाल उपाध्याय की छवि थी। उस क्षेत्र पर अंकित था। किसी भी भाषा के शब्दों को समझना और अनुवाद करना कठिन है, लेकिन पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने इस जटिल कार्य को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत की और उन्होंने, चुनाव प्रचार करते हुए कम समय में मिर्जापुर जिले में सम्राट चंद्रगुप्त नाटक लिखकर भारतीय इतिहास के एक सांस्कृतिक रूप से कुटिल राज्य का चित्रण किया है। इसका उद्देश्य जनता की राय और देश की सभ्यता बनाना है। और संस्कृति लोगों को परिचित करना था। यह उनके संगठन कौशल के कारण था कि एक वर्ष के कम समय में उन्हें 1962 में जनसंघ के महासचिव का पद दिया गया था। जो कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा अच्छी तरह से किया गया था। 1967 में जनसंघ के अध्यक्ष के पद पर आसीन हुए। जगद्गुरु ने शंकराचार्य की जीवनी भी लिखी। सनातन साधना और भारत के राष्ट्र की एकता के शक्तिशाली प्रस्तावक जगद्गुरु शंकराचार्य दर्शन शब्दों में डालना आसान नहीं था, लेकिन जगद्गुरु शंकराचार्य सांस्कृतिक विद्वानों में बहुत लोकप्रिय हैं। इसका कई भाषाओं में अनुवाद हुआ।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनीति क्यों चुना ?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य से पंडित दीनदयाल जी तक जनसंघ यही है, उन्हें सक्रिय राजनीति में लाया गया था, क्योंकि वह एक महान व्यक्ति थे, जो एक. राजनीतिज्ञ होने के बावजूद भी राजनीति में शामिल थे, जिन्हें सत्ता के लिए कोई दिलचस्पी नहीं थी। पंडित अपने धर्म को बुरे अर्थों में राष्ट्र की सेवा मानते थे। इस गुण को पहचानते हुए डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने उन्हें जनसंघ में लाया और उन्होंने उसी भावना से काम किया। पंडित दीनदयाल जी ने कहा हमने किसी भी वर्ग या समुदाय की सेवा का संकल्प नहीं लिया है। लेकिन पूरे देश की सेवा करने का संकल्प लिया है। सभी देशवासी हमारे भाई हैं, जब तक हम इन सभी को भारत माता की संतान होने का सच्चा गौरव नहीं देते हैं। हम चुप नहीं बैठेंगे। हम भारत माता को सच्चा बनायेंगे, फूले-फूलेगे यह देश प्रहारण धारिणी दुर्गा बनकर राक्षसों का वध करेगा। अज्ञान को दूर करने के लिए प्रकाश फैलाएंगे। जब तक हिंद महासागर और हिमालय भारत में प्रवेश करते हैं, तब तक एकरसता, कड़ी मेहनत, समानता, समृद्धि, आत्मज्ञान, सुख और शांति की सप्त जनवी की वापसी नहीं होगी। ब्रह्मा, विष्णु और महेश सभी इस प्रयास में हमारी मदद करेंगे। विजय को तपस्या पर भरोसा है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय में दृढ़ इच्छा शक्ति थी। उन्होंने सरकार की किसी भी गलत नीति का पुरजोर विरोध किया। पंडित जनसंघ के राजनीतिक के माध्यम से कांग्रेस और उसकी गलत नीतियों का विरोध करते थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि राजनीति मानव व्यवहार के क्षेत्र में एक छोटा सा हिस्सा है। यह राजनीति सत्ता के सहारे देश के जीवन पर हावी रही है। इसकी गलत सोच और कार्यान्वयन ने लोगों के जीवन को दूषित कर दिया है। मन को धर्म, अध्यात्म, प्रकृति, चिंतन और त्याग से शुद्ध किया जाता है, आध्यात्मिकता के चिंतन से ही मन को शुद्ध किया जाता है। समाज की सामाजिक,

व्यवहारिक, राजनीतिक समस्याएं, उन्हें एक परिष्कृत मन से ही दूर किया जा सकता है। मानव मन सभी की नियति है और मन अपने आप में स्वस्थ रह सकता है।

आज हमारा संकट यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, हम स्वयं की भावना को भूल गए हैं और झूठे आकर्षण में पड़ गए हैं। आज हम उधार लेते हैं, शिक्षा उधार लेते हैं, वेशभूषा उधार लेते हैं, त्योहार मनाते हैं, आज उधार की इच्छाएं, चिंतन और मनन करते हैं, दुनिया के किसी अन्य देश को ऋण की इतनी बड़ी कमी नहीं मिलेगी। हमारी स्वतंत्रता आत्मनिर्भर होने के बजाय परवलयिक हो गई है। हमारा शरीर और मन एक-दूसरे के अधीन हैं, फिर हम कहां मुक्त हैं पंडित दीलदयाल उपाध्याय अपने देश, अपनी संस्कृति और अपने लोगों से प्यार करते थे। यह प्रशासनिक परीक्षा के लिए चुने जाने का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है और न केवल नौकरी बल्कि देश के लिए एक सेवा है, और उन्होंने अपने जीवनकाल के लिए इस जिम्मेदारी को पूरा किया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एक युग दृष्टि के रूप में राजनीतिक जीवन का धर्म लोकतंत्रिक शासन की स्थिति

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक युग दृष्टी के व्यक्ति थे क्योंकि उनके द्वारा दिए गए विचार आज भी प्रासंगिक हैं। बहुमुखी प्रतिभा वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय न केवल एक राजनीतिज्ञ थे, बल्कि इससे भी बढ़कर विचारक, रहस्यवादी, कुशल लोग, आयोजक, समाज सुधारक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक विचारक थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय किसी को निर्देश देने से पहले ध्यान लगाते थे। राष्ट्रीय राज्य के बारे में उनके विचार आज अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। 1963 में कार्यकर्ताओं के आग्रह पर जौनपुर की लोकसभा सीट से उपचुनाव लड़ा और जनसंघ के कार्यकर्ताओं ने चनाव प्रचार के लिए अन्य दलों की नस्लवादी शैली अपनाने की अनमति मांगी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने इस पर कहा कि ऐसी जीत हार से भी बदतर होगी जिसमें आपको अपने सिद्धांतों और आदर्शों का त्याग करके जातिवाद को आश्रय देना होगा। मैं ऐसी जीत नहीं चाहता। उपचुनाव इतना मायने नहीं रखता। यदि इस भत को इतना महत्व दिया जाता है, तो यह निश्चित रूप से हमें निगल जाएगा। पंडित दीनदयाल उपाध्याय चुनाव हार गए, लेकिन अपनी हार से पहले, उन्होंने जातिवादी की जीत हासिल की और उन्होंने हमेशा लाने की कोशिश की और समाज में गरीबों और दलितों के प्रति सम्मान दिया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय कहा करते थे। वे गंदे और अनपढ़ लोग हैं जो हमारे नारायण हैं। हमें उनकी पूजा करनी है। यह हमारा सामाजिक और मानवीय धर्म है। जिस दिन हम उन्हें पक्के मकान बनाएंगे, जिस दिन हम उनके बच्चों और महिलाओं को शिक्षा और जीवन प्रदर्शन का ज्ञान कराएंगे, उन्हें उद्योग व्यवसाय की शिक्षा देकर उनकी आय में वृद्धि करें। उसी दिन हमारे भाईचारे को व्यक्त किया जाएगा। हमारी शिक्षा का केंद्र आराध्य और हमारे उपाध्यक्ष हमारे पराक्रम और प्रयास और उपलब्धियों के मानक का उपकरण होंगे, जो आज का शाब्दिक अर्थ और उदासीन है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने आदर्श राज्य की कई तरह से कल्पना की और अवधारणा पर विचार किया पंडित दीनदयाल उपाध्याय धर्मराज को आदर्श राज्य मानते थे, उन्होंने कहा यह एक गैर सांप्रदायिक राज्य है, जिसमें सहनशीलता और सम्मान है। सभी धर्मों और प्रथाओं के प्रत्येक नागरिक को अपनी आस्था और राज्य नीति के अनुसार पूजा करने का अधिकार होना चाहिए। सत्ता हासिल करने के लिए उन्हें अपना आधार लोकतंत्र भूल जाना चाहिए, जिस पर वे खड़े हैं।

स्वतंत्र भारत और उनकी समस्याओं पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार

जब भारत स्वतंत्र हुआ उसके समक्ष कई समस्याएं थीं। उसका स्वभाव क्या था, उसका उदगम कहाँ था इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने जनसंघ के माध्यम से अपने सुझाव दिए थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने स्वतंत्रता के साथ कई समस्याओं को हल करना चाहते थे। वह समाज को आर्थिक और सामाजिक रूप से पुनर्गठित करना चाहते थे। यह मौजूदा सामाजिक समस्याओं और भारतीय जीवन पद्धति को संतुलित करना था। यह सब काम अकेले कांग्रेस के नेतृत्व के लिए संभव नहीं था, लोकतंत्र के कारण सत्ता सभी को आकर्षित कर रही थी। इस कारण से, जाति, वर्ग, समुदाय, गुट कांग्रेस में इकट्ठा होने लगे। परिणामस्वरूप, कांग्रेस की संस्कृति बदल गई। उस समय, स्वतंत्र भारत के सामने पाँच प्रकार की समस्याएं थीं पहली समस्या समाज का राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ज्ञान है। दूसरी समस्या पुनर्गठन है तीसरी समस्या थी सभी वर्गों के साथ चलना यानी समन्वय चौथी समस्या सामाजिक तनाव है और पांचवीं समस्या थी प्रशासनिक

पुनर्गठन की। जनसंघ और पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कांग्रेस के सामने इन समस्याओं पर अपने विचार रखे। लेकिन जव स्वराज्य का सूरज में बदलना समय की जरूरत थी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने ठीतंज अखंड भारत 'शीर्षक में अपने विचारों को स्पष्ट किया है और इन समस्याओं को दूर करने के लिए विचार किया इसीलिए उस समय पंडित दीनदयाल उपाध्याय की राजनीतिक सोच समीचीन थी।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकमात्र चुनाव में जौनपुर से क्यों हार गए

वर्ष 1962 में देश में तीसरा लोकसभा चुनाव हुआ था। लेकिन एक साल बाद ही कुछ सीटों पर उपचुनाव कराए गए। जिसमें जौनपुर उत्तर प्रदेश की एक सीट थी जिस पर पूरे देश की नजर थी, क्योंकि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रहे थे। हालांकि पंडित दीनदयाल उपाध्याय चुनाव नहीं लड़ना चाहते थे, लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शीर्ष नेता भाऊराव देवरस और बहुत सारे कार्यकर्ताओं का उन पर कुछ दबाव था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जनसंघ के नेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अपने जीवन में पहली और आखिरी बार जौनपुर से लोकसभा चुनाव लड़ना पड़ा। क्योकि उनकी पहचान एक अनुभवी नेता के रूप में थी इसलिए यह माना जाता था कि वे जौनपुर से जीतेंगे यदि उनके कद का एक कारण था, तो दूसरा कारण यह था कि केवल एक साल पहले जनसंघ के ब्रह्मजीत सिंह यहां रहते थे। उनकी अचानक मृत्यु हो गई और उपचुनाव नजदीक आ गया। जनसंघ मान रहा था कि पार्टी का जौनपुर में मजबूत जनाधार है। उपचुनाव में यह फायदेमंद होगा। जब चुनाव प्रचार शुरू हुआ तो यह दिखाई देने लगा कि कांग्रेस के राजदेव मजबूत हो रहे हैं। न जाने क्यों पंडित दीनदयाल उपाध्याय को चुनावों में जितनी ताकत लगानी थी उतनी नहीं लगा सके फिर ऐसा लगने लगा कि उन्होंने भी हार को स्वीकार कर लिया है कि यह चुनाव हारने वाले है। अंत में जब चुनाव का परिणाम आया तो पंडित दीनदयाल उपाध्याय हार गए। 1963 के उपचुनाव में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की हार के पीछे कई कारण थे।

उनमें सबसे महत्वपूर्ण था जातीय ध्रुवीकरण से कांग्रेस ने राजपूत मतदाताओं का ध्रुवीकरण करने की पूरी कोशिश की और यही हआ। जवाब में जनसंघ की स्थानीय इकाई ने ब्राह्मण मतदाताओं को लुभाने की कोशिश गई थी हालाँकि खुद पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऐसे रुवीकरण के पक्ष में नहीं थे। इस लिए जौनपुर से हारने का कारण बना। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अपनी पॉलिटिकल डायरी में लिखा कि जनसंघ को इस चुनाव में हार का सामना करना ही था, ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि लोगों का समर्थन नहीं था बल्कि हम कांग्रेस के सभी चुनावी रणनीति का जवाब नहीं दे सके थे।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय द्वारा लोकतंत्र पर विचार

समाजवाद का पहला हमला यह था कि पूरी दुनिया में समाजवादी विचारकों को आतंकित किया गया था सिवाय उन लोगों को छोड़कर जो लोकतंत्र पर लोहे के आवरण के पीछे रहे थे। यह लोकतांत्रिक आदर्शों के कारण ही जनता के प्रति उनकी सहानुभूति रही है। यह लोकतंत्र था जिसने उन्हें राजनीतिक की समानता दी। लेकिन वैज्ञानिक खोजों और यंत्रीकृत उत्पादन विधियों ने उन्हें आर्थिक असमानता के गड्ढे में धकेल दिया। ऐसी राजनीतिक स्थिति में समानता महत्वपूर्ण नहीं थी। मार्कस ने एक वर्गहीन समाज का नारा बुलंद किया। अंतरिम अवधि तक श्रमिकों की तानाशाही के बारे में बात की गई थी। इसमें संदेह की पूरी गुंजाइश थी। लोगों को त्यागने के लिए कहा गया था कि कुछ संदिग्ध पाने के लिए उनके पास पहले से क्या था। उन्होंने यह सोचा भी नहीं था कि समाजवाद वही छीन लेगा जो उसे पहले से मिला हुआ था। उनके पास पहले से ही कमी थी। उन्हें समाजवाद के माध्यम से कुछ हासिल करना चाहिए था। लेकिन इससे पहले कि वे कुछ भी देते समाजवाद ने उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और राजनीतिक समानता का अपहरण कर लिया। 28 अप्रैल 1919 को प्रिंस क्रोपाटकिन ने पश्चिमी यूरोप के श्रमिकों को एक पत्र लिखा, उन्होंने कहा मैं आपसे कहना चाहता हूं कि मेरे विचार एक मजबूत केंद्रीकृत राज्य के आधार पर एक कम्युनिस्ट गणराज्य बनाने का यह प्रयास है पार्टी कम्युनिज्म तानाशाही के लौह कानून के तहत विफलता में समाप्त होने के लिए बाध्य है। हम रूस में यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि साम्यवाद का परिचय कैसे न दिया जाए। जब तक देश में एक पार्टी तानाशाही कार्यकर्ता और किसानों का शासन है। वे अपना पूरा महत्व खो देते हैं। यह नौकरशाही को इतना दुर्जेय बनाता है, कि फ्रांस नौकरशाही को एक पेड़ बेचने के लिए चालीस अधिकारियों की मदद की जरूरत होती है, जो कि राष्ट्रीय उच्च मार्ग पर

एक तूफान से टूट जाता है, यह तुलना में एक मात्र भिखारी है। मुझे लगता है कि यह स्पष्ट रूप से बताने के लिए मेरी जिम्मेदारी है कि मुझे लगता है कि मजबूत तानाशाही के आधार पर पार्टी तानाशाही के कदमों के नीचे एक कम्युनिस्ट गणराज्य बनाने का प्रयास एक विफलता के रूप में आएगा। हम सीख रहे हैं कि कैसे रोका जाए | जब तक देश की तानाशाही बनी रहती है, किसान और मजदूर परिषद अपना महत्वपूर्ण स्थान नहीं बना सकते, वे अपनी सभी विशिष्टताएँ खो देंगे। रूसी गणराज्य आज एक अभेद्य नौकरशाही को जन्म दे रहा है जिसके सामने यह फ्रांसीसी नौकरशाही से पराजित हो जाएगा, लोकतंत्र और सार्वजनिक कर्तव्य का रख रखाव एक साधन है। राजनीतिक क्षेत्र में न केवल लोकतंत्र की जरूरत है। लेकिन आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में वास्तव में लोकतंत्र अविभाज्य है। किसी एक क्षेत्र में लोकतंत्र की कमी लोकतंत्र को किसी अन्य क्षेत्र में पनपने नहीं देगी। लचीलापन प्रतिष्ठा व्यक्ति और संपूर्ण गहनता के साथ एकता लोकतंत्र की आत्मा है। इन अभिव्यक्तियों के बिना लोकतंत्र का बाहरी रूप स्मृतिहीन और जड़विहीन है। यदि चौतन्य मौजूद है तो देश काल परिस्थिति से लोकतंत्र के रूप में भेद हो सकता है। अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करने का अधिकार राजनीतिक लोकतंत्र की एक प्रमुख विशेषता है। आर्थिक लोकतंत्र के लिए कब्जे और उपभोग की स्वतंत्रता आवश्यक है। सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना प्रतिष्ठा और अवसर की समानता से होती है। यह कोशिश करनी होगी कि ये अधिकार एक-दूसरे के पूरक और पोषक हों, न कि विनाशकारी-विरोधी और यूरोपीय समाजवादियों के नए प्रयासों ने उस तत्व को जन्म दिया, जिसे आज लोकतांत्रिक समाजवाद कहा जाता है। वह कम्युनिस्टों के साथ मतभेद रखते थे और घोषणा करते थे कि समाजवाद का जन्म लोकतांत्रिक तरीके से होना चाहिए। वे एक साथ समाजवाद और लोकतंत्र दोनों की पूजा करना चाहते हैं, लेकिन मूल प्रश्न यह है कि क्या समाजवाद और लोकतंत्र एक साथ फल-फूल सकते हैं। सैद्धांतिक इस सवाल पर आशान्वित है। लेकिन प्रगतिवादी इसमें विश्वास नहीं करते हैं। समाजवाद ने सहमति व्यक्त की है कि उत्पादन के सभी स्रोत राज्य के अधीन होने चाहिए। चूँकि समाजवादी यह समझते हैं कि समाज के राजनीतिक, बौद्धिक और सामाजिक जीवन को उसके उत्पादन के स्रोतों द्वारा ढाला जाता है, इसलिए समाजवादी व्यवस्था में राज्य आर्थिक क्षेत्र के साथ-साथ राजनीतिक और अन्य क्षेत्रों का भी पूर्ण वर्चस्व होना आवश्यक है। यह एक स्थिति पैदा करेगा जब लोकतांत्रिक अधिकारों का उन लोगों के खिलाफ प्रभावी ढंग से उपयोग करना संभव नहीं होगा जो शासन में हैं। समाजवादी गोलियों का पहला शिकार निश्चित रूप से एक लोकतांत्रिक होगा। समाजवाद और लोकतंत्र एक साथ नहीं चल सकते, एक शेर और एक बकरी के लिए एक ही घाट पर पानी पीना असंभव है।

निष्कर्ष में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक जीवन से संबंधित तथ्यों और साक्ष्यों के आधार पर यह स्पष्ट किया गया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक जीवन राष्ट्रीयता और प्रेम की भावना से भरा था। उसके लिए कार्यालय या सत्ता का कोई लालच नहीं था। उनका पूरा राजनीतिक जीवन निस्वार्थ रूप से राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित था। भारतीय राजनीति में प्रवेश करने का उनका मुख्य उद्देश्य राजनीतिक स्वतंत्रता और भारत की समृद्धि थी। राष्ट्र के प्रति समर्पण की उनकी भावना में कर्तव्य, बलिदान, समर्पण और सामाजिक हित की भावना निहित रहा है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राजनीतिक दलों की उपयोगिता और जिम्मेदारियों को अच्छी तरह से समझा और लोकतंत्र की प्रणाली को अन्य शासन प्रणालियों से बेहतर माना है। उन्होंने राजनीतिक दलों में प्रधानता कार्यकर्ताओं की निष्ठा से संगठन की दक्षता और पारदर्शिता को आवश्यक माना। चुनावों के समय, वे राजनीतिक दलों द्वारा अपनाए गए जोड़तोड़ के खिलाफ थे, सार्वजनिक नारों, भ्रामक प्रदर्शनों और रैलियों को गुमराह करने के लिए और राजनीतिक दलों के लिए आदर्श आचार संहिता के पालन के पक्षधर थे। उन्होंने मतदाताओं से सही प्रतिनिधित्व चुनने का सुझाव दिया जो खुद में एक चरित्र है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में जनमत का महत्वपूर्ण स्थान है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था "मतदाता को शिकायत नहीं करनी चाहिए बल्कि उसे प्रभुत्व स्थापित करना चाहिए। उसे याचना नहीं की जानी चाहिए कि उसे नाराजगी या ईर्षया नहीं दिखानी चाहिए, बल्कि उसे धैर्य और दृ ढ़ता दिखानी चाहिए। इस तरह, पंडित दीनदयाल उपाध्याय मतदाताओं को उनके अधिकारों के लिए उन्हें कर्तव्य और अधिकार दोनों के लिए जागृत करना चाहिए और कहा कि उनके वोट का महत्व मूल्यवान है। उन्होंने कहा कि संप्रभुता लोगों में निहित है, इसलिए लोग भारत के लिए एक नया उज्ज्वल भविष्य बनाने में सक्षम हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक जीवन चिंतनशील, धोखेबाज,

असत्य, दिखावा और व्यावहारिक से बहुत दूर था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने उच्च दार्शनिक राजनीतिक चिंतन को अपनाया था। इसलिए उनका राजनीतिक जीवन सत्ता और स्थिति से अलग हो गया था और राष्ट्र सेवा में निस्वार्थ था।

संदर्भ ग्रन्था –

1. उ.प्र. संदेश सितम्बर 1991 पृष्ठ संख्या 40-65
2. भारत के वैभव का दीनदयाल मार्ग ह्य.ना.दी पृष्ठ संख्या 28-29
3. पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनीतिक चिंतन पृष्ठ संख्या 29
4. पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति दर्शन पृष्ठ संख्या 58
5. पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनैतिक चिन्तन पृष्ठ संख्या 38
6. विजयवाड़ा अधिवेशन में दिया भाषण 1965
7. जनसंघ विशेषक आर्गनाइजर 1956
8. पॉलिटिक्ल डायरी पृष्ठ संख्या 139-154
9. माधुरी दुबे, पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानव दर्शन का महत्व, पृष्ठ संख्या 74-76.
10. वर्मा, जवाहर लाल शिक्षा शोध महामना मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचार बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झॉसी।